महाकवि भर्तृहरि की व्याख्यान विधि की आधुनिकता

मोनिका अग्रवाल*
नेहा मिश्रा**

संस्कृत के महाकवि भर्तृहरि जी द्वारा विरचित नीतिशतकम् संस्कृत का एक अद्वितीय नीतिपरक काव्यग्रंथ है। यह ग्रंथ अपने अंदर विभिन्न नैतिक मूल्यों एवं शैक्षिक प्रत्ययों को सँजोए हुए है। महाकवि भर्तृहरि जी ने सर्वसाधारण तक अपनी बात को सम्प्रेषित करने के लिए प्रमुख रूप से व्याख्यान विधि को आधार बनाया है और इस व्याख्यान विधि को अनेकानेक प्रविधियों जैसे-उदाहरण, कथा-कथन, तुलनात्मक, प्रश्नोत्तर इत्यादि के द्वारा और भी अधिक पुष्ट किया है। यही कारण है कि आज जिस व्याख्यान विधि को अमनोवैज्ञानिक एवं पुरातन कहकर नकारा जा रहा है वही व्याख्यान विधि भर्तृहरि जी के वैविध्यतापूर्ण प्रयोग के कारण वर्तमान शिक्षकों के लिए प्रेरणास्त्रोत बन सकती है।

संस्कृत साहित्य के महाकवि भर्तृहरि जी द्वारा विरचित 'नीतिशतकम्' संस्कृत का एक अद्वितीय नीतिपरक काव्यग्रंथ है। यह ग्रंथ अपने अन्दर विभिन्न नैतिक मूल्यों एवं शैक्षिक प्रत्ययों को सँजोए हुए है। यद्यपि रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों में यह ग्रंथ संस्कृत विषय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित एक पुस्तक है जिसे बी.ए. की कक्षाओं में पढ़ाया जाता है और छात्र इस पुस्तक का अध्ययन मात्र परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उद्देश्य से ही करते हैं। परंतु अपने अनुपम ज्ञानकोष एवं अद्‌भुत प्रस्तुति तथा प्रेषण तकनीकों के कारण यह एक सार्वकालिक, सर्वोपयोगी एवं शिक्षापरक काव्यग्रंथ है। भर्तृहरि का यह नीतिशतक अपने अन्दर कई विषयों को समाहित किये हुये है इसमें सज्जन-दुर्जन, प्रशंसा-निन्दा, परोपकार-स्वार्थ, भाग्य-कर्म, ज्ञान-अज्ञान आदि विषयों पर चर्चा की गई है। भर्तृहरि जी ने इन विषयों को सर्वसाधाारण तक सम्प्रेषित करने के लिए प्रमुख रूप से व्याख्यान विधि को आधार बनाया है लेकिन इस व्याख्यान को अनेकानेक प्रविधियों– जैसे-उदाहरण, कथा-कथन, तुलनात्मक, प्रश्नोत्तर इत्यादि द्वारा सशक्त बनाते हुए अत्यंत सरल, सुंदर एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। शिक्षण विधियों की यह

* *सहायक प्रोफ़ेसर,* बी.एड., एस.एस. कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश, 242226
** *छात्रा,* एस.एस. कॉलेज, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश, 242226

विविधता भर्तृहरि जी के इस मन्तव्य को प्रकट करती है कि बालक को जिस प्रकार से समझ में आए उसे उसी भाँति समझाया जाए और किसी भी कीमत पर अधिगम की रोचकता के साथ समझौता न किया जाए।

भर्तृहरि जी का उद्देश्य उपर्युक्त समस्त विधियों के माध्यम से छात्रों को केवल तथ्यों को रटवाने के स्थान पर उनमें जिज्ञासा की प्रवृत्ति को विकसित करना, कुछ नवीन खोजने और कुछ नवीन रचने की आदत का विकास करना है। अतः इन समस्त विशेषताओं को एक शिक्षक अपने छात्रों में कक्षा शिक्षण द्वारा किस प्रकार विकसित करे, भर्तृहरि ऐसे शिक्षकों के लिए एक आदर्श के रूप में उभरते हैं, उनका मत है कि छात्रों को जो भी तथ्य बताए जायें विविधता से बताए जायें। वे तथ्यों को छात्रों को आत्मसात् करवाने के लिए तथ्यों से अधिक उनसे संबंधित उदाहरणों का भंडार छात्रों के समक्ष लगाते हैं जैसा कि वे कहते हैं–

> **''जैसे कि पूर्वाद्ध (दोपहर के पूर्व) और उत्तरार्द्ध (दोपहर के बाद) की छाया भिन्न-भिन्न होती है जो पूर्वाद्ध काल में आरंभ में बढ़ने वाली और बाद में घटने वाली होती है। तथा उत्तरार्द्ध काल में आरंभ में छोटी और बाद में धीरे-धीरे बढ़ने वाली होती है वैसे ही दुर्जनों की मैत्री और सज्जनों की मैत्री की भी अलग-अलग विशेषतायें हैं, वह यह कि दुर्जनों की मैत्री शुरू में बढ़ती है और बाद में घटती है और सज्जनों की मैत्री शुरू में अल्प तथा बाद में क्रमशः बढ़ती है।''**[1]

इस उदाहरण में भर्तृहरि जी ने जिस सरलता के साथ दुर्जनों एवं सज्जनों के मैत्री विषयक स्वभाव को व्यक्त किया है वह सरलता वास्तव में वर्तमान शिक्षकों के लिए एक आदर्श समान है। उन्होंने जो उदाहरण तथ्य के आत्मसातीकरण हेतु चुना वह प्रत्येक बालक के दिन-प्रतिदिन का साथी है। सभी ने दिन के पूवार्द्ध एवं उत्तराद्ध की छाया को देखा होगा। परंतु इसे एक प्राकृतिक क्रिया समझकर कोई महत्त्व प्रदान नहीं किया किंतु भर्तृहरि जी ने इसी प्राकृतिक एवं सभी के द्वारा दर्शनीय क्रिया को सज्जनों एवं दुर्जनों के व्यवहार विषयक अंतर को समझने के लिए एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया।

भर्तृहरि के ये उदाहरण स्वयं में अद्वितीय हैं। इनकी सर्वप्रमुख विशेषता इनकी विविधता है। उदाहरणों की इस विविधता एवं छात्रों के जीवन से सन्निकटता छात्रों को तथ्यों को अपने जीवन से जोड़कर देखने के लिए प्रेरित करती है और इस दशा में उनके मस्तिष्क में तुलना करना, संबंध स्थापित करना, तर्क करना, चिंतन करना, खोज करना जैसी बौद्धिक क्षमताओं का विकास अनायास हो जाता है। भर्तृहरि द्वारा प्रस्तुत उदाहरणों के माध्यम से व्याख्यान देने की यह विधि वास्तव में वर्तमान शिक्षक के लिए वरदान है और शिक्षक का अत्यधिक सहयोग करती है। क्योंकि यह प्रविधि शिक्षक को शिक्षण का विस्तृत क्षेत्र प्रदान करती है जिसके अंतर्गत वह अपनी प्रतिभा का विस्तार व उपयोग कर सकता है। वर्तमान में यह विधि प्रचलन में है किंतु इसका उपयोग उस भाँति नहीं हो पा रहा है जैसा कि होना चाहिए। अतः ऐसी स्थिति में भर्तृहरि द्वारा प्रस्तुत उदाहरण एवं उन्हें प्रस्तुत करने की

शैली दोनों ही एक शिक्षक के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। एक शिक्षक इस प्रकार के उदाहरणों को अपने शिक्षण में सम्मिलित करके छात्रों का अधिकाधिक हित कर सकता है और स्वयं के शिक्षण को प्रभावपूर्ण बना सकता है। भर्तृहरि की व्याख्यान विधि की विशिष्टता इस बात में भी है कि वे समय-समय पर छात्रों के साथ प्रश्नोत्तर पर भी बल देते हैं और लगभग प्रत्येक तथ्य को सम्प्रेषित करने के उपरांत छात्रों से पृष्ठ पोषण भी प्राप्त करते हैं। जैसा कि उन्होने नीतिशतकम् में उद्धत किया है –

'जो अपहरणर्त्ताओं द्वारा देखा अर्थात् हस्तगत् नहीं किया जा सकता, सदा अवर्णनीय आनंद देता है, याचकों के लिए सदा दिया जाता हुआ भी परम वृद्धि को प्राप्त करता है, कल्पों का अंत होने पर भी नष्ट नहीं होता - ऐसा विद्या नाम का गुप्त धन जिसके पास है, उनके प्रति हे राजन! अभिमान करना छोड़ दो उनके साथ कौन स्पर्धा कर सकता है? अर्थात् कोई नहीं''[2]

प्रश्नोत्तर का यह तरीका निश्चित रूप से छात्रों को कक्षा में सजग बनाए रखने में एक शिक्षक की अत्यंत मदद करेगा जब छात्रों से व्याख्यान के दौरान समय-समय पर छोटे-छोटे प्रश्न पूछे जायेंगे, उनकी सहमति या असहमति को जानने का प्रयास किया जायेगा तो निश्चित ही उनका संपूर्ण ध्यान शिक्षक के व्याख्यान की ओर ही रहेगा। ताकि कोई भी तथ्य उनसे छूटने न पाए और शिक्षक द्वारा पूछे जाने पर वे तत्काल ही उत्तर देने में समर्थ हो सकें। इस तरह के प्रश्न छात्रों के बीच और शिक्षक-छात्र के बीच विश्वास का वातावरण कक्षा में बना देते हैं जहाँ, दोनों पक्ष सरलता और सहजता से अनुभव बाँट सकते हैं, तथा विवादों को न बढ़ाकर उस पर रचनात्मक प्रश्न उठाकर विचार-विमर्श करके हल प्रस्तुत करने की चेष्टा कर सकते हैं।

भर्तृहरि जी कभी-कभी अपने पाठकों को छोटी-छोटी कहानियाँ भी सुनाकर व्याख्यान विषय की रोचकता को बढ़ा देते हैं। क्योंकि कहानी वह विधा है जो प्रत्येक छात्र के लिए आनंद का स्रोत होती है। हर कोई उसे ध्यान से सुनना चाहता है। उसमें उपस्थित किरदारों का अंतर्मन में साक्षात्कार करना चाहता है। कहानी छात्रों में कल्पनाशक्ति को जन्म देती है, उनकी सोच का विस्तार करती है, उन्हें जिज्ञासु बनाती है और जब यह कहानी अध्यापन का माध्यम बनती है तो अध्ययन में रोचकता स्वंयमेव ही उत्पन्न हो जाती है और अध्ययन अपेक्षाकृत अधिक स्थायी हो जाता है। जैसा कि भर्तृहरि जी एक स्थल पर समझाना चाहते है कि ''संकट के समय अपनों को छोड़कर अन्यंत्र चले जाना अनुचित और गरिमाहीन है। अत: कर्तव्य की रक्षा एवं स्वाभिमान का विचार अवश्य करना चाहिए। इस बात को प्रेषित करने हेतु वे प्राचीनकालीन पर्वतों की एक अन्त:कथा प्रस्तुत करते हैं, जिनके कभी पंख हुआ करते थे और जो उड़ते थे। जहाँ वे उतरते थे वहाँ जीवों का नाश हो जाता था। अत: इन्द्र ने इनके पंख काट दिए। जब हिमालय के पंख काटे जा रहे थे तो उनका पुत्र मैनाक सागर में छिप गया और पिता को विपत्ति में अकेला छोड़ गया। जैसा कि वे लिखते हैं-

'आग की ऊपर उठ रही अनेक चिंगारियों से दु:सह मतवाले इन्द्र द्वारा छोड़े गए

वज्र के प्रहारों से हिमालय के पुत्र मैनाक के पंखों का कट जाना अच्छा था किंतु पिता हिमालय के दु:ख में होने पर इन्द्र से डरकर समुद्र में जाकर छिप जाना और मात्र अपनी रक्षा कर लेना उचित नहीं था।'' [3]

भर्तृहरि जी की इस विधि का त्वरित प्रभाव सर्वप्रथम छात्रों के जिज्ञासा स्तर पर पड़ता है। जब छात्रों के समक्ष इस प्रकार के तथ्य उजागर होंगे कि प्राचीनकाल में पर्वतों के पंख हुआ करते थे, हिमालय पर्वत जो कि आज भारत के उत्तर में अडिग खड़ा भारत का एक सजग प्रहरी है वह भी कभी उड़ता था तो छात्र की जिज्ञासा प्रवृत्ति तो प्रबल होगी ही साथ ही विषय के प्रति छात्र में रोचकता का स्तर भी अत्यन्त उच्च हो जायेगा। वह प्रतीक्षा करेगा कि शिक्षक और भी ऐसे ही तथ्यों को प्रस्तुत करे और ऐसी ही रोचक कहानियाँ भी हमें सुनाए। जब शिक्षक अपने शिक्षण हेतु कुछ कहानियों का आश्रय लेगा तो छात्र की कल्पनाशक्ति भी अवश्य ही जाग्रत होगी जैसा कि जब कोई छात्र भर्तृहरि जी की पर्वत के पंख होने वाली कहानी सुनेगा तो कम-से-कम एक बार कल्पना अवश्य करेगा कि जब पर्वत के पंख होते होंगे तो वे कैसे उड़ते होंगे? वह केवल पर्वत के बारे में ही नहीं वरन् अनेकों वस्तुओं के बारे में भी विभिन्न दिशाओं में कल्पना करेगा। जैसे कि यदि आज भी पर्वत उड़ते तो क्या होता? यदि पर्वत पर बैठकर हम अपने स्कूल जाते तो क्या होता? यदि पर्वतों का ट्रैफिक जाम होता तो क्या होता? और ऐसी ही न जाने कितनी ही अनेकानेक कल्पनाएं बालमन में प्रस्फुटित होंगी। यद्यपि ये कल्पनाएं ऊपरी तौर पर व्यर्थ ही प्रतीत हो रही हैं किन्तु यह कल्पनाशक्ति कहीं-न-कहीं बालक की सृजनात्मक क्षमता को परिपालित व पोषित अवश्य करेगी।

इसके अतिरिक्त कहानियाँ कक्षा में शोरगुल की स्थिति को भी नहीं आने देतीं क्योंकि चाहे प्रतिभाशाली बालक हो या मन्दबुद्धि बालक या फिर सामान्य बालक कहानियाँ सभी बालकों के मन को लुभाती हैं। बस एक शिक्षक की कुशलता इसी बात में है कि वह तथ्यों के ज्ञान के साथ कहानियों को किस प्रकार जोड़े, और किस प्रकार सरल एवं आकर्षक लहज़े में कहानियों को प्रस्तुत करते समय छात्रों की जिज्ञासा, रुचि एवं सृजनात्मकता को पल्लवित एवं पुष्पित करे।

महाकवि भर्तृहरि ने बालकों को सदाचरण, नैतिक मूल्यों एवं शिक्षा की महत्ता से परिचित कराने के लिये व्याख्यान विधि के अन्तर्गत तुलनात्मक विधि का भी प्रयोग किया है और व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्षों की तुलना समाज के श्रेष्ठतम् प्राणियों व वस्तुओं से की है। तथा नकारात्मक पक्षों की तुलना समाज के निकृष्टतम् प्राणियों व वस्तुओं से की है। उदाहरणत–

''क्षुद्र प्राणियों के आचरण की तुलना कुत्ते के द्वारा घृणास्पद भोजन ग्रहण करने से,[4] मूर्ख की तुलना पशु से,[5] ज्ञान की तुलना गुप्त धन से,[6] क्रोध की तुलना शत्रु से,[7] दुष्ट पुत्रादि की तुलना अग्नि से,[8] मित्र की तुलना दिव्य औषधि से,[9] दुर्जन पशु की तुलना सर्पों से,[10] लज्जा की तुलना आभूषण से,[11] तथा पराक्रमी पुरुष की तुलना शेर से की है।''[12]

इसी प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन के उदाहरण भर्तृहरि जी के नीतिशतक में सर्वत्र

बिखरे हुए हैं। जब बालक के समक्ष इस प्रकार का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया जाएगा तो उसका रुझान स्वत: ही सकारात्मक गुणों के अंगीकरण की ओर होगा। वह उन गुणों के आत्मसातीकरण की ओर तत्पर होगा जिनकी तुलना श्रेष्ठ वस्तुओं से की गई है एवं नकारात्मक गुणों को वह पूर्णत: त्याज्य समझकर उनसे विरक्त हो जाएगा। अत: बालक के व्यक्तित्व के नैतिक विकास की दृष्टि से यह विधि अत्यंत उपयोगी है। यद्यपि ऐसे कई लेखक व कवि हैं जिन्होंने अपने ग्रंथ में तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया है, किंतु तुलनात्मक विधि का जो विशिष्टतम् एवं अद्वितीयतम् प्रयोग भर्तृहरिकृत नीतिशतकम् में दृष्टिगोचर होता है वैसा प्रयोग अन्यत्र दुर्लभ है।

भर्तृहरि जी की तुलनात्मक विधि की विशेषता यह भी है कि इन्होंनें तुलना हेतु जो उपमान प्रयुक्त किये वे किसी क्षेत्र विशेष या वस्तु विशेष अथवा व्यक्ति विशेष से बँधे न होकर इस पृथ्वी के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक फैले हुए हैं। कभी वे तुलना हेतु पशु जगत में पदार्पण करते हैं तो अन्यत्र स्वर्गलोक में, कभी वे वनस्पतियों को अपना विषय बनाते हैं तो कभी दिव्य औषधियों को। प्राणियों के आचरण एवं व्यवहार के भी वे ज्ञाता हैं। आभूषण, धन, अग्नि, सूर्य और यहाँ तक कि भोजन इत्यादि सभी वस्तुओं को उन्होंने अपनी तुलना का विषय बनाया है। शैक्षिक दृष्टिकोण से यह विधि स्वयं में अति महत्वपूर्ण सिद्ध होती है क्योंकि जब शिक्षक छात्र के समक्ष तुलना के रूप में इस पृथ्वी के प्रत्येक कोने से एकत्र किए गए उदाहरण प्रस्तुत करेगा तो निश्चित रूप से छात्र के ज्ञान भण्डार में अभूतपूर्व वृद्धि होगी। और उनमें मानसिक थकावट और अरुचि जैसे लक्षण जो कि एक ही स्थिति में बैठकर कोरे व्याख्यान का श्रवण करने से उत्पन्न हो जाते हैं दूर होंगे। अत: छात्रों को ऊर्जावान बनाए रखने के लिए एक शिक्षक द्वारा किसी तुलना का सहारा लेकर कक्षा में समय-समय पर नवीन प्राण का संचार करना भी पूर्णत: प्रासंगिक है ताकि छात्र संपूर्ण कक्षाकाल में सक्रिय रहें एवं ज्ञान के आत्मसातीकरण हेतु अधिक-से-अधिक प्रयत्नशील रहें।

भर्तृहरि ने अपने श्लोकों में शिक्षा से जुड़े विभिन्न आयामों पर विचार किया है परंतु यहाँ उनमें से केवल शिक्षण विधि का उल्लेख इस आशय से किया गया है कि अध्यापक सीखने की प्रक्रिया में छात्रों की मदद स्वयं अपनी कक्षा में अपनाई जाने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से कर सकता है। जिससे कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण हो व छात्र ज्ञान के सृजन के लिये प्रोत्साहित हों। आज शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक के द्वारा छात्रों को ज्ञान देने के लिये जिन विधियों का सहारा लिया जा रहा है उनमें से व्याख्यान विधि एक अत्यंत पुरातन विधि है। आज इस विधि को शिक्षक केंद्रित समझते हुए इसके महत्त्व को पूर्णत: नकारा जा रहा है जबकि भर्तृहरि जी के संदर्भ में यदि हम व्याख्यान विधि को देखें तो यह विधि पूर्णत: बाल मनोविज्ञान के अनुरूप है। आज से करीब 1400 वर्ष पूर्व भर्तृहरि जी ने जिस तकनीक से इस विधि का प्रयोग किया वह वर्तमान शिक्षकों के लिये प्रेरणा स्रोत है। भर्तृहरि जी की यह विधि केवल कोरा व्याख्यान नहीं है वरन् विभिन्न उदाहरणों, कहानियों एवं व्यंग्यों इत्यादि का अद्‌भुत संगम है साथ ही यह विधि

किसी नीरस वातावरण की सृजनकर्ता भी नहीं है। प्रत्युत् एक ऐसी ऊर्जामयी रोचक एवं ध्यानाकर्षण की प्रक्रिया है जिसका रसास्वादन छात्र को जानबूझकर नहीं करना पड़ता वरन् अनायास ही वह कब इसकी ओर आकृष्ट हो जाता है यह वह स्वयं ही नहीं जान पाता। अतः आधुनिक शिक्षकों के लिये भर्तृहरि जी द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान विधि आधुनिकता से परिपूर्ण है एवं पूर्णतः ग्राह्य है।

संदर्भ

1. *भर्तृहरिकृतं नीतिशतकम्.* 2005. व्याख्याकार-रवीन्द्र कुमार, *कुमार प्रकाशन,* जनकपुरी, बरेली, श्लोक सं. -60
2. उपरिवत् -श्लोक सं. 16
3. उपरिवत् -श्लोक सं. 36
4. उपरिवत् - सं. ^{4} से ^{12} में श्लोक सं. 9, 12, 16, 21